महावीरा कृषि समाचार

YEAR 4 | EDITION 11 नवंबर, 2026 www.rmphosphates.com

एग्रीकल्चर News:

2036 तक भारत का मक्का उत्पादन 75 मिलियन टन करने का लक्ष्य, हैदराबाद में पहला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

04 नवंबर 2026, नई दिल्ली: 2036 तक भारत का मक्का उत्पादन 75 मिलियन टन करने का लक्ष्य, हैदराबाद में पहला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू – भारत में मक्का उत्पादन बढ़ाने, किसानों की आय में सुधार करने और खेती को अधिक टिकाऊ बनाने के उद्देश्य से पहला अंतर्राष्ट्रीय मक्का सम्मेलन 2 नवंबर को हैदराबाद के जेडी कन्वेंशन सेंटर में शुरू हुआ। 'बदलती दुनिया में भोजन, पशु-आहार, चारा, ईंधन और स्थिरता के लिए मक्का क्रांति' (M4FS) विषय पर आयोजित इस सम्मेलन में देश-विदेश के वैज्ञानिक, नीति-निर्माता, कृषि संस्थानों और उद्योग जगत के प्रतिनिधि शामिल हुए। सम्मेलन में भारत के मक्का उत्पादन को मौजूदा लगभग 55 मिलियन टन से बढ़ाकर अगले दशक में 75 मिलियन टन तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया।

मक्के की खेती में किसानों को केंद्र में रखने पर जोर

डॉ. जाट ने मक्के से जुड़े पारंपरिक 4एफ विजन को बढ़ाकर 5एफ करने की बात कही। पारंपरिक 4एफ में भोजन (फूड), पशु आहार (फीड), चारा (फॉडर) और ईंधन (फ्यूल) शामिल हैं। उन्होंने किसानों को इस मॉडल के केंद्र में रखने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि मक्का उत्पादन बढ़ाने के लिए खेती में मौजूद कमियों और कम पैदावार के कारणों की पहचान करना जरूरी है। इसके लिए प्रणाली-विज्ञान आधारित दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए, ताकि फसल प्रबंधन से जुड़ी समस्याओं को दूर करके उत्पादन बढ़ाया जा सके।



RMPCL
तुरंत एक्सपर्ट कृषि सलाह व समाधान पाये, आज ही हमसे कॉल द्वारा जुड़े : 8956926412
MAHAVEERA ZYRON

चने की उन्नत खेती की जानकारी-



उपयुक्त भूमि एवं जलवायु

- चने की खेती के लिए ठंडा और शुष्क मौसम अच्छा माना जाता है।
- अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है।
- खेत में पानी जमा न होने दें, क्योंकि अधिक नमी से फसल को नुकसान हो सकता है।
- बुवाई के लिए खेत में पर्याप्त नमी होना जरूरी है।

उन्नत किस्मों का चयन

- अपने क्षेत्र की जलवायु और बुवाई के समय के अनुसार उन्नत किस्म चुने
- जाँच-परखकर प्रमाणित बीज का उपयोग करें।
- ऐसी किस्मों को प्राथमिकता दें, जो आपके क्षेत्र में अच्छी पैदावार के लिए अनुशंसित हो।



खेत की तैयारी

- खेत की जरूरत के अनुसार जुताई करके मिट्टी को भुरभुरा बनाएं।
- खेत को समतल रखें, ताकि नमी बनी रहे और पानी जमा न हो।
- अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद का उपयोग मिट्टी की सेहत सुधारने में मदद कर सकता है।
- बुवाई से पहले खेत में पर्याप्त नमी सुनिश्चित करें।

बीज एवं बुवाई

- स्वस्थ और प्रमाणित बीज का ही उपयोग करें।
- सामान्यतः चने की बुवाई अक्टूबर से नवंबर के दौरान की जाती है, लेकिन सही समय क्षेत्र और किस्म के अनुसार तय करें।
- कतार से कतार और पौधे से पौधे की उचित दूरी रखें।
- बीज को बहुत गहराई में न बोएं।
- बीज की मात्रा उसके आकार और किस्म के अनुसार तय करें।

RMPCL आ गया है एकसाथ 6 पोषक तत्वों वाला 6 Nutrition का Sixer महावीरा ज़िरोंन पॉवर+ सभी फसलों के लिए मान्य MAHAVEERA ZIRON

बीज उपचार

- बुवाई से पहले बीज का अनुशंसित उपचार करें।
- चने में राइजोबियम कल्चर का उपयोग करें।
- फॉस्फोरस की उपलब्धता के लिए PSB जैव उर्वरक अपनाएं।
- बीज उपचार के लिए सही उत्पाद चुनें और उसके निर्देशों के अनुसार ही इस्तेमाल करें।





खरपतवार नियंत्रण

- फसल की शुरुआती अवस्था में खरपतवार पर खास ध्यान दें।
- बुवाई के लगभग 25-30 दिन बाद जरूरत के अनुसार निराई-गुड़ाई करें।
- खरपतवारनाशी का प्रयोग केवल चने में अनुशंसित उत्पाद और सही मात्रा के अनुसार ही करें।



सिंचाई प्रबंधन

- चने की फसल सामान्यतः कम पानी में उगाई जाती है।
- यदि खेत में नमी की कमी हो और सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो, तो जरूरत के अनुसार हल्की सिंचाई करें।
- फूल आने और फलियां बनने के समय मिट्टी में नमी की कमी न होने दें।
- ज़रूरत से ज्यादा सिंचाई न करें एवं खेत में जलभराव से बचें।

रोग एवं कीट नियंत्रण

मुख्य रोग

- चने की फली छेदक इल्ली
- माहू

मुख्य कीट

- उकठा रोग (विल्ट)
- जड़ सड़न
- झुलसा रोग

फसल का नियमित निरीक्षण करें। शुरुआती लक्षण दिखाई देने पर पहचान की पुष्टि करें और जरूरत के अनुसार कृषि विशेषज्ञ की सलाह लें।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

चने की अच्छी बढ़वार और बेहतर फली विकास के लिए **नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश और सल्फर सहित जरूरी पोषक तत्वों का संतुलित प्रबंधन करें।**

- बुवाई से पहले मिट्टी की जांच कराएँ।
- मिट्टी की जांच और स्थानीय सिफारिश के अनुसार खाद एवं उर्वरक की मात्रा तय करें।
- चने में फॉस्फोरस का विशेष महत्व है, इसलिए इसकी उपलब्धता पर ध्यान दें।

चने की फसल में पोषक तत्वों का प्रबंधन
(अनुशंसित उर्वरक की मात्रा - KG 08:16:10:10) N:P:K:S प्रति एकड़)

मिट्टी तैयारी के समय							
अवधि	Mahaveera Ziron Power Plus	MOP	Urea	Symtron (Mycorrhiza)	AMITRON-Z (Zinc + Amino Acid)	Baleco NPK (11:11:08)	Boron 20%
	KG	KG	KG	KG	ML	ML	KG
बुवाई के समय	100	16	0	4	0	0	0
25-30 दिन बाद में	0	0	17	0	0	250	0
45-50 दिन बाद में	0	0	0	0	250	0	250
कुल मात्रा KG/GM/ML	100	16	17	4	250	250	250
जल घुलनशील उर्वरक 4-5 ग्राम /लीटर पानी में	35-40 दिन की अवधि मे 12:61:00 का 50-55 दिन की अवधि मे 00:52:34 का तथा 70-75 दिन की अवधि मे 13.00.45/ 00.00.50 का एक छिड़काव अवश्य करे						

कटाई एवं भंडारण

- जब पौधे पीले-भूरे होने लगें और फलियां पक जाएं, तब फसल की कटाई करें।
- कटाई के बाद फसल को अच्छी तरह सुखाएँ।
- भंडारण से पहले दानों में पर्याप्त नमी और दानों का कम होना सुनिश्चित करें।
- दानों को साफ, सूखी और सुरक्षित जगह पर रखें।
- भंडारण के दौरान कीटों से बचाव के लिए नियमित जांच करें।

महावीरा एग्री एड्वाइज़री

चने में उकठा रोग के लक्षण और बचाव के उपाय क्या हैं?

लक्षण:

- चने का पौधा अचानक मुरझाने लगता है।
- पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं।
- पौधे की बढ़वार धीमी हो जाती है।
- रोग बढ़ने पर पौधा धीरे-धीरे सूख जाता है।
- खेत में कुछ पौधे हरे रहते हैं, जबकि कुछ मुरझाकर सूखने लगते हैं।

उपाय:

- अपने क्षेत्र के लिए अनुशंसित और रोग-सहनशील किस्म का चयन करें।
- स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का उपयोग करें।
- बुवाई से पहले अनुशंसित बीज उपचार करें।
- खेत में पानी जमा न होने दें।
- रोग की पहचान होने पर कृषि विशेषज्ञ की सलाह से उचित प्रबंधन अपनाएं।





चने की फसल को फली छेदक इल्ली से कैसे बचाएं?

लक्षण:

- पत्तियों और पौधे के कोमल हिस्सों पर इल्ली के खाने के निशान दिखने लगते हैं।
- इल्ली फूलों और फलियों को नुकसान पहुंचाती है।
- फलियों में छेद दिखाई देने लगते हैं।
- दानों की बढ़वार और फसल की पैदावार पर असर पड़ सकता है।

उपाय:

- फसल पर नियमित नजर रखें और पत्तियों व फलियों को ध्यान से देखें।
- पौधों पर इल्ली और नुकसान के निशान दिखाई दें, तो समय रहते पहचान करें।
- शुरुआती अवस्था से ही कीट के प्रकोप पर ध्यान दें।
- जरूरत पड़ने पर कृषि विशेषज्ञ की सलाह से उचित नियंत्रण उपाय अपनाएं।
- कीटनाशक का इस्तेमाल करते समय पैक पर दिए निर्देशों का पालन करें।

गेहूं की फसल में पीली धारियां पड़ने के लक्षण और उपाय क्या हैं?

लक्षण:

- गेहूं की पत्तियों पर पीले रंग की धारियां दिखाई देने लगती हैं।
- पत्तियों पर पीले धब्बे धीरे-धीरे बढ़ने लगते हैं।
- पत्तियों पर पीले रंग का पाउडर जैसा पदार्थ दिखाई दे सकता है।
- रोग बढ़ने पर पत्तियां सूखने लगती हैं और फसल की बढ़वार प्रभावित होती है।

उपाय:

- फसल का नियमित निरीक्षण करें और शुरुआती लक्षणों पर ध्यान दें।
- अपने क्षेत्र के लिए अनुशंसित रोग-सहनशील किस्मों का चयन करें।
- खेत में रोगग्रस्त पौधों की पहचान करें।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर कृषि विशेषज्ञ की सलाह लें।
- जरूरत के अनुसार अनुशंसित फफूंदनाशी का उपयोग करें।





गेहूं की फसल में दीमक के प्रकोप को कैसे पहचानें और बचाव करें?

लक्षण:

- पौधे अचानक पीले पड़कर सूखने लगते हैं।
- प्रभावित पौधे आसानी से मिट्टी से बाहर निकल आते हैं।
- पौधों की जड़ों और तने के निचले हिस्से में नुकसान दिखाई देता है।
- खेत में जगह-जगह पौधे सूखे हुए नज़र आते हैं।

उपाय:

- बुवाई से पहले खेत की अच्छी तरह तैयारी करें।
- खेत में नमी की उचित स्थिति बनाए रखें।
- फसल की नियमित निगरानी करें और प्रभावित पौधों की पहचान करें।
- दीमक का प्रकोप दिखाई देने पर समय रहते नियंत्रण के उपाय अपनाएं।
- जरूरत पड़ने पर कृषि विशेषज्ञ की सलाह से अनुशंसित कीटनाशक का उपयोग करें।

RMPCL
महावीरा ले कर आया है अपने किसान भाइयों के लिए
उत्तम जल घुलनशील उर्वरक उम्दा क्वालिटी के साथ
MAHAVEERA ZITRON



सरसों में माहू (चेपा) के लक्षण और बचाव के उपाय क्या हैं?

लक्षण:

- फूलों और कोमल टहनियों पर छोटे कीट दिखाई देते हैं।
- पत्तियां सिकुड़ने और मुड़ने लगती हैं।
- फूल और फलियों का विकास प्रभावित होता है।
- दानों की पैदावार कम हो सकती है।

उपाय:

- फूल आने के समय फसल की नियमित निगरानी करें।
- माहू से प्रभावित हिस्सों की पहचान करें।
- खेत में लाभकारी कीटों का संरक्षण करें।
- अधिक प्रकोप होने पर कृषि विशेषज्ञ की सलाह से अनुशंसित कीटनाशक का उपयोग करें।



RMPCL
आ गया है एकसाथ 6 पोषक तत्वों वाला 6 Nutrition का Sixer
महावीरा ज़िरोंन पॉवर+ सभी फसलों के लिए मान्य
MAHAVEERA ZITRON

महावीरा यशोगाथा

चेतन पाटील
बोदरली, बुरहानपुर
फसल- चना
प्रोडक्ट-महावीरा बोरॉन 20%



मैंने अपनी चने की फसल में महावीरा बोरॉन 20% का उपयोग किया। इसके इस्तेमाल के बाद मुझे फसल में अच्छी बढ़वार और बेहतर विकास देखने को मिला। मेरी फसल की स्थिति देखकर मुझे इसका परिणाम अच्छा लगा। चना की अच्छी फसल के लिए महावीरा बोरॉन 20% मेरे लिए उपयोगी रहा। मैं अपने सभी किसान भाइयों को भी सलाह दूँगा कि चने की फसल में एक बार महावीरा बोरॉन 20% का उपयोग जरूर करें और इसके परिणाम खुद देखें।

अमन जाट
निपानिया, देवास
फसल- चना
प्रोडक्ट- महावीरा ज़िरोंन



मैं पहले अपनी चने की फसल में DAP का उपयोग करता था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों से महावीरा ज़िरोंन का उपयोग कर रहा हूँ। जब से मैंने ज़िरोंन का उपयोग करना शुरू किया है, मेरी फसल की पैदावार में बढ़ोतरी हुई है, और इस बार मैंने चने की फसल में 1 एकड़ से 10 क्विंटल उत्पादन लिया है। साथ ही मुझे दाने की क्वालिटी में भी अच्छा परिणाम देखने को मिला।
महावीरा ज़िरोंन, DAP के मुकाबले कम कीमत में उपलब्ध है और इसके फायदे भी अनेक हैं। मैं सभी किसान भाइयों को यही सलाह दूँगा कि एक बार महावीरा ज़िरोंन का उपयोग जरूर करें।



RMPCL
तुरंत एक्सपर्ट कृषि सलाह व समाधान पाये, आज ही हमसे कॉल द्वारा जुड़े : 8956926412
MAHAVEERA ZIRON